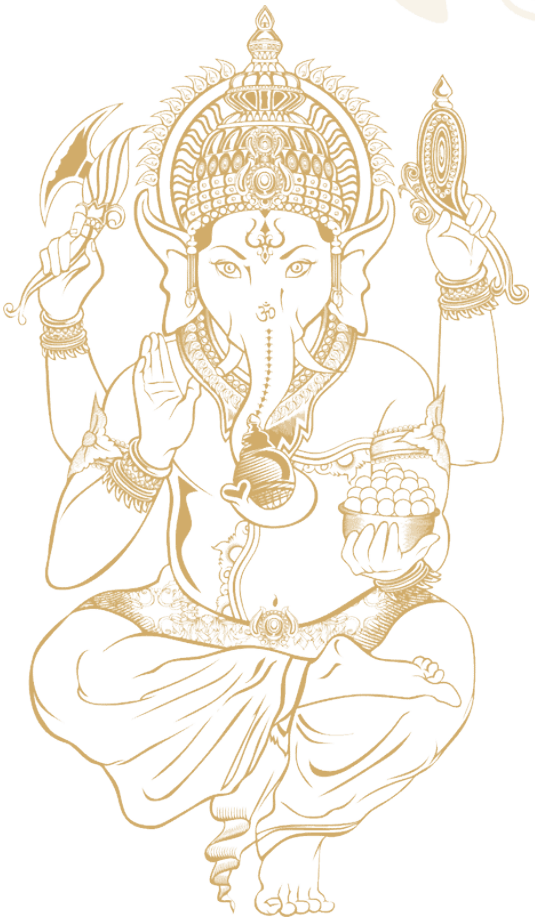

Amita

24 Apr 1990

09:15 PM

Ganganagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120953101**

तिथि 24/04/1990 **समय** 21:15:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Ganganagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:43:29
अक्षांश 29:54:00 उत्तर **रेखांश** 73:56:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	10:50:22 घं
वेलान्तर	00:01:48 घं
सूर्योदय	05:58:55 घं
सूर्यास्त	19:06:33 घं
चैत्रादि संवत	2047
शक संवत	1912
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	15
नक्षत्र	अश्विनी
योग	प्रीति
करण	चतुष्पाद

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चू-चुन्नी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	सूर्य
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

केतु 5वर्ष 5मा 18दि

चन्द्र

12/10/2021
13/10/2031

चन्द्र	13/08/2022
मंगल	14/03/2023
राहु	12/09/2024
गुरु	12/01/2026
शनि	13/08/2027
बुध	11/01/2029
केतु	12/08/2029
शुक्र	13/04/2031
सूर्य	13/10/2031

योगिनी

भ्रामरी 3वर्ष 1मा 15दि

भ्रामरी

09/06/2025
09/06/2029

भ्रामरी	18/11/2025
भद्रिका	09/06/2026
उल्का	07/02/2027
सिद्धा	19/11/2027
संकटा	08/10/2028
मंगला	18/11/2028
पिंगला	07/02/2029
धान्या	09/06/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			08:28:14	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			10:28:27	मेष	अश्विनी	4	केतु	शनि	उच्च राशि	1.76	मातृ	पितृ	जन्म
चंद्र			02:55:02	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	सम राशि	1.38	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			09:04:04	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	गुरु	सम राशि	1.71	पुत्र	भ्रातृ	साधक
बुध	व		23:42:50	मेष	भरणी	4	शुक्र	शनि	सम राशि	0.95	अमात्य	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			12:10:58	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	शत्रु राशि	0.97	भ्रातृ	धन	साधक
शुक्र			25:44:15	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि	1.37	आत्मा	कलत्र	वध
शनि			01:31:38	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	स्वराशि	1.41	कलत्र	आयु	विपत
राहु	व		19:02:44	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		19:02:44	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	केतु	मित्र राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

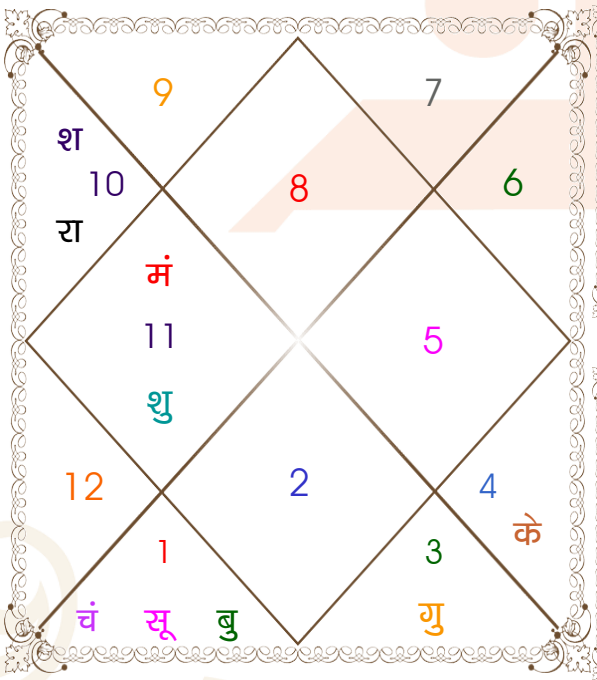

चन्द्र कुंडली

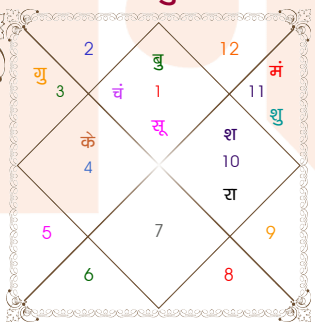

नवमांश कुंडली

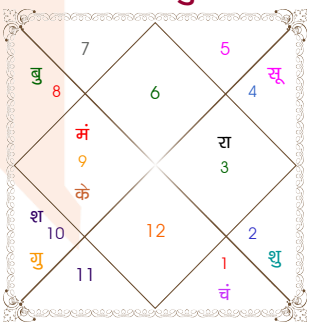

सर्वाष्टकवर्ग

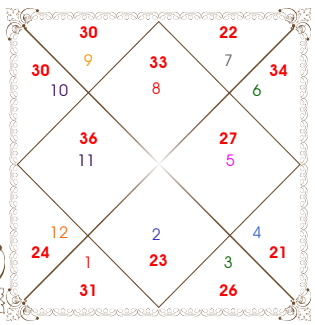

दशमांश कुंडली

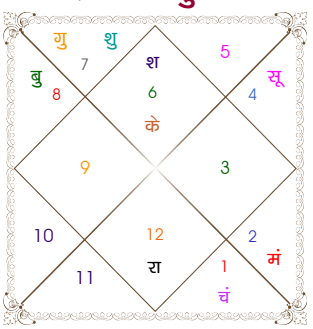

सिद्धपीठ बालाजी धाम जोड़किय
जोड़किया (हनुमानगढ़)
7062685690
pawan.sharma.85690@gmail.com

नक्षत्रफल

अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्रानुसार आपकी अश्वयोनि, देवगण,आद्यनाड़ी क्षत्रिय वर्ण तथा सिहँ वर्ग होगा। जन्म नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपका जन्म नाम चु अक्षर से शुरू होगा। यथा चुन्नी देवी ।

गण्डमूल नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण जातक के पिता को कष्ट होता है, अतः इसकी शान्ति करनी परमावश्यक होती है। यह कार्य जन्म समय के 27 दिन के अन्दर होना चाहिए। इस हेतु अश्विनी नक्षत्र के कम से कम 28000 जप किसी योग्य विद्वान से करवाने चाहिए तथा 27 वें दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस समय जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार विधिपूर्वक शान्ति करने से उक्त दोष न्यून हो जाता है तथा शुभ फल की प्राप्ति होती है। जप तथा हवन अश्विनी नक्षत्र के मंत्र से सम्पन्न करने चाहिए।

मंत्र – ऊँ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ऊँ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।।

अश्विनी नक्षत्र में जन्म होने के कारण आप श्रृंगार प्रिय होंगी तथा आभूषणों के प्रति विशेष आकर्षण आपके मन में सदैव बना रहेगा। जिसे प्राप्त करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। सभी लोग आपकी चतुराई तथा बुद्धिमता की प्रशंसा करेंगे। दर्शनीय शारीरिक सौन्दर्य तथा रूपवती होने के कारण आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत होगा तथा सौभाग्यवती होने के कारण जीवन आनन्दमय रहेगा।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

अध्ययन के प्रति आपकी विशेष रूचि प्रारभ्म से ही रहेगी तथा व्यवहार में शालीनता के कारण विनम्रता पूर्वक सबको सम्मान प्रदान करेगी। आपका यश चारों तरफ फैलेगा तथा जीवन का अधिकाँश भाग सुख ऐश्वर्य एवं धन से युक्त हो कर व्यतीत होगा।

अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

सत्य का अनुसरण करने के लिए आप सर्वदा तत्पर रहेंगी तथा सेवा भाव की प्रवृति भी बाल्यकाल से ही आपके अर्न्तमन में विद्यमान रहेगी। समस्त प्रकार की सम्पति की स्वामिनी

बनने का गौरव आप प्राप्त करेंगी। साथ ही आदर्श पति तथा सदगुणों से युक्त सुपुत्र आपकी गरिमा की नित्य अभिवृद्धि करेंगे।

सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत्।
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

सांसारिक कार्यों में व्यस्तता के कारण शरीर का या खानपान का आप ध्यान नहीं रख पायेंगी। फलस्वरूप शरीर की स्थूलता बढ़ सकती है। अपने वैभव एवं ऐश्वर्य तथा सद्व्यवहार के कारण जनता में आप विशेष रूप से लोकप्रिय रहेंगी। सामान्य तथा विशिष्ट दोनों वर्गों का सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगी।

सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः।।
जातक दीपिका

अर्थात अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूलकाय, धनवान तथा जनता का प्यारा होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

मेष राषि में उत्पन्न होने के कारण आप अल्प भोजन करने वाली होंगी। आप अपने माता पिता की अकेली या अन्य भाई बहिनों में निश्चित रूप से श्रेष्ठ सन्तति होंगी।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नेत्र लाली लिए हुए गोलाकार होंगे। किसी आकस्मिक चोट या दुर्घटना के कारण आपके सिर में निशान हो सकता है। आपके हाथ तथा पैर विशेष कान्ति से युक्त रहेंगे। आप स्वभाव से ही जल से भयभीत रहेंगी। जीवन की विषम से विषम परिशिस्थितियों का आप साहसपूर्वक सामना करेंगी तथा समाज में यथोचित सम्मान की आप अधिकारिणी होंगी। आप चंचल बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा धन को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करेंगी। जिससे कभी कभी आपको समस्याओं से उलझना पड़ सकता है। आपके पास मित्रों तथा सहयोगियों की बहुलता रहेगी। तथा पुत्रों की संख्या भी अधिक रहेगी। सभी से स्नेह करना आपका स्वाभाविक गुण होगा। फलतः समाज के सभी वर्गों का यथोचित विश्वास तथा सम्मान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगी।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरु व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आपकी प्रवृति शीघ्र ही क्रोधित तथा उसके बाद शीघ्र ही प्रसन्न होना इस प्रकार की होगी। इधर उधर सैर करना तथा दूर दराज के क्षेत्रों का परिभ्रमण करना आपको रूचिकर लगेगा। आपके हाथ में शौर्य सूचक चिन्ह चक्र पताका इत्यादि हो सकते है। पुरूष वर्ग में आप प्रिय तथा सम्मान एवं आदरयोग्य समझी जायेंगी। आपके व्यक्तित्व की जो प्रमुख विशेषता होगी वह यह होगी कि सेवा तथा सहयोग का भाव आपके अन्तर्मन में सर्वदा विद्यमान रहेगा चाहे आप कैसी भी विषम परिस्थितियों का सामना कर रहीं होंगी।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को आप आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करेंगी। आपकी इस प्रवृति से आपके श्रेष्ठ या सम्माननीय संबंधी असन्तुष्ट होंगे। जिससे आप उनसे या वे आप से अलग हो सकते हैं। चूँकि घर के सारे कार्यों में पति के ऊपर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा अतः आपसी वैमनस्य का यह भी एक प्रमुख कारण हो सकता है। धन तथा पुत्र से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा वैभव की कोई कमी नहीं होगी एवं समाज में अच्छी कीर्ति मिलेगी।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण में आपकी रूचि ऐसे स्थानों पर जाने की होगी जो अगम्य हों अर्थात जहाँ

कठिनाई एवं अत्यन्त परिश्रम के साथ पहुँचा जा सकता हो। समयनुसार आप मांस, मदिरा इत्यादि अभक्ष्य पदार्थो का भक्षण भी कर सकती हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में स्वाभाविक तेज परिलक्षित होगा। यह तेज कभी-कभी क्रोध का रूप भी धारण करेगा फलस्वूप नई समस्याएं उत्पन्न होंगी। प्रकृति आप की चंचल होगी अतः अवसर पड़ने पर आप मिथ्या भाषण से भी नहीं चूकेंगी।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रूचि रहेगी। गर्म पदाथों से आप परहेज रखें तथा दुर्घटनाओं से दूर रहें। शरीर का पूर्ण रूप से सावधानी पूर्वक ध्यान रखें अन्यथा मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुर तथा हमेशा सत्य बोलने वाली होगी। अपनी वाणी द्वारा आप कभी भी दूसरों को दुःखी नहीं करेंगी। सव कुछ सादगी से ग्रहण करने की प्रतिभा से आप सुसम्पन्न रहेंगी। सात्विक तथा अल्प भोजन करना आपको रूचिकर लगेगा। गुणों की आप पहचान करने वाली होगी तथा महान लोगों तथा विद्वानों द्वारा जो भी गुण प्रतिपादित किए गए हैं। वे समस्त गुण आप में व्याप्त होंगे। धन, वैभव, ऐश्वर्य एवं भौतिक सम्पदा की आपके पास कमी नहीं होगी। इसकी स्वामिनी आप जीवन पर्यन्त बनी रहेंगी।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी सुन्दरता देखने योग्य होगी। गरीबों तथा सामाजिक संस्थाओं में आप दानी के रूप में जानी जाएंगी फलस्वरूप समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आप अत्यन्त सरल हृदय की स्वामिनी होंगी तथा छल, कपट, दिखावे तथा प्रपंचों से हमेशा दूर रहेंगी। भोजन आप अल्प

मात्रा में करेंगी तथा बहुत सारे विषयों के बारे में आप जानने वाली होंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आपने अश्वयोनि में जन्म लिया है। अतः आप स्वतंत्र प्रकृति की होंगी तथा प्रत्येक कार्य को स्वच्छन्दता पूर्वक करना आपको रूचिकर लगेगा। किसी प्रकार का बाह्य हस्तक्षेप आप पसन्द नहीं करेंगी। साथ ही आप सदगुणों से भी सुशोभित होंगी। साहस तथा बहादुरी का अभाव नहीं होगा जो भी कार्य करेंगी साहस से सम्पन्न करेंगी। समाज में चारों तरफ आपका प्रभुत्व रहेगा।

स्वामिभक्ति या वफादारी का गुण आप में सर्वदा विद्यमान रहेगा। तथा सबका विश्वास आपके ऊपर बना रहेगा।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में

आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, तथा एकादशी तिथियां, दोनों कृष्ण तथा शुक्लपक्ष की, मघा नक्षत्र विष्कुम्भ योग बवकरण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ अर्थात अनिष्ट फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 शुक्ल तथा कृष्णपक्ष की तिथियों में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन इत्यादि महत्वपूर्ण कार्य न करें। सफलता नहीं मिलेगी। इसके अतिरिक्त रविवार, मघानक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में जब चन्द्रमा स्थित हो तो तब भी कोई शुभकार्य प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि का ही योग बनेगा। उपरोक्त महीने, दिन तथा वारादि समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण रूपेण ध्यान रखें।

जब आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो। मानसिक परेशानियों में बृद्धि हो रही हो या व्यापार में निरन्तर या अन्तर से नुकसान हो रहा हो अथवा किसी प्रकार की निकट भविष्य में हानि की संभावना हो तो उस समय आप अपने इष्ट हनुमान जी की पूजा करें। साथ ही सोना, ताम्र, गेहूँ, गुङ, घी, लालवस्त्र, लाल कनेर का फूल इन पदार्थो का यथाशक्ति सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य आचार्य के द्वारा कम से कम 7 हजार मंत्र जप करवाने चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव न्यूनतम हो जाएगा।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।

मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।

सिद्धपीठ बालाजी धाम जोड़किय
जोड़किया (हनुमानगढ़)
7062685690
pawan.sharma.85690@gmail.com